International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.8, August 2013 ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

छायावादी साहित्यिक जागरण

संदीप कुमार नामदेव

1. सार :

'छायावाद' आधुनिक काल का स्वर्ण युग है। छायावाद की समय सीमा मुख्य रूप से सन् 1920 से 1936 ई. तक मानी गई है। छायावाद प्रेम, प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यात्मक सूक्ष्म अभिव्यंजना है। छायावादी कवियों में प्रमुख रूप से महादेवी वर्मा, प्रसाद, पंत एवं निराला हैं। माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में प्रमुख स्वर राष्ट्रीयता का है, साथ ही बच्चन, नरेन्द्र शर्मा तथा रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' जैसे गीतिकारों की रचनाओं में प्रणय की लौकिक एवं मांसल अभिव्यक्ति हुई है। छायावादी कवियों में अतीत गौरव की अभिव्यक्ति, स्वाधीनता की चेतना, राष्ट्रप्रेम, त्याग और बलिदान, अस्मिता की खोज एवं प्रकृति चित्रण का वर्णन है। छायावादी साहित्य तत्कालीन परिस्थितियों से उद्‌भूत है। इन दिनों भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की आकांक्षा, राष्ट्रप्रेम, अहिंसा, माटी से प्रेम जैसे कुछ मूल्य व्याप्त थे। साथ ही अंग्रेजी शासन को अनिवार्यतः उखाड़ फेकना दृढ़ संकल्प था। यही छायावाद की राजनैतिक पृष्ठभूमि भी थी। छायावाद के जनक 'प्रसाद' जी ने अपने देश को 'मधुमय' बताया। निराला ने 'जागो फिर एक बार' का शंखनाद किया। महादेवी वर्मा ने 'जाग तुझको दूर जाना' की चिन्ता व्यक्त की। पंत ने 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' द्वारा नवीनता की इच्छा व्यक्त की। छायावादी काव्य वैभव के समय आकलन से स्पष्ट होता है कि यह काल हिन्दी साहित्य का उत्कर्षकाल है तथा परवर्ती कालों के लिए भावों एवं विचारों का कोष है।

2. प्रस्तावना :

छायावाद आधुनिक काल का स्वर्ण युग है। आधुनिक काल के तृतीय चरण के काव्य को छायावादी काव्य कहा गया है। छायावाद की समय सीमा मुख्य रूप से सन् 1920 ई. से 1936 ई. तक मानी गई है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार ''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका संबंध काव्यवस्तु से होता है, अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन

बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।''[1] तथा ''छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।''[2]

छायावाद को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता है क्योंकि छायावादी रचनाओं में कई प्रवृत्तियों का समावेश है। छायावाद में प्रेम, प्रकृति, सांस्कृतिक चेतना और मानवतावादी दृष्टिकोण समाहित है इस तरह छायावाद को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि छायावाद प्रेम प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना है। छायावादी रचनाकाल में राष्ट्रीयता तथा प्रणय पूरित कविताएँ लिखी गईं। माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर प्रमुख है। इसी प्रकार बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' जैसे गीतकारों ने प्रणय की लौकिक एवं मांसल अभिव्यक्ति की। बच्चन की हालावादी रचनाएँ भी इसके अंतर्गत हैं। प्रसाद पन्त, निराला और महादेवी वर्मा की रचनाएँ छायावादी विशेषताओं से युक्त हैं और परिभाषा की दृष्टि से भी पर्याप्त हैं।

छायावादी रचनाओं में उच्च कोटि का कवित्व एवं अनुभूति की तीव्रता विद्यमान है। इन रचनाओं में देश तथा समाज को जाग्रत करने की भावना कूट–कूट कर भरी है। छायावादी कविता में अतीत गौरव की अभिव्यक्ति, स्वधीनता की चेतना, राष्ट्र प्रेम, त्याग और बलिदान एवं अस्मिता की खोज दिखाई देती है।

छायावादी कविता में प्रकृति चित्रण भी पर्याप्त मात्रा में हुआ है लेकिन प्रकृति के उपादानों में भी राष्ट्रीयता की भावना देखने को मिलती है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि छायावाद हिन्दी काव्य का गौरवपूर्ण अध्याय है।

3. विवेचन :

छायावाद का समय देश की गुलामी का समय था। उन दिनों सदियों की दासता से पीड़ित जनता में स्वातंत्र्य चेतना जोर मार रही थी। छायावाद युगीन साहित्य तत्कालीन युग की परिस्थितियों से उद्‌भूत है, क्योंकि द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जहाँ छायावाद में स्थूलता, अतिशय नैतिकता एवं इतिवृत्तात्मकता का विरोध हुआ, वहीं तत्कालीन पराधीनता के कारण राष्ट्रीयता, आत्म गौरव, मानववाद जैसे मूल्यों का समावेश भी हुआ। इन दिनों भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की आकांक्षा, राष्ट्र प्रेम, अहिन्सा,

गाँधीवाद जैसे कुछ मूल्य व्याप्त थे। देश में अंग्रेजी हुकूमत को समाप्त करने का जी–तोड़ प्रयास किया जा रहा था। यही छायावाद की राजनीतिक पृष्ठभूमि थी।

साहित्यकार इस दुनिया का सबसे जागरूक प्राणी होता है। उसे समूची मानवता का नेतृत्व स्वयमेव प्राप्त होता है। उसकी वाणी हमेशा जागरण का संदेश देती है। ऐसे में भला छायावादी कवि अपने कर्तव्य से विमुख कैसे हो सकते हैं। महाकवि निराला का कवि हृदय भारतीयों को जाग्रत करते हुए कह उठा –

''शेरों की माँद में,
आया है आज स्यार
जागों फिर एक बार!''[3]

इसी तरह प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने पुरातनता, रूढ़िवादिता एवं निष्क्रिय मान्यताओं के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि जो पुराना पड़ गया है, जिसकी उपयोगिता समाप्त हो गई है, उसका नष्ट हो जाना ही अच्छा है।

''द्रुत झरो जगत् के जीर्ण पत्र,
हे स्रस्त ध्वस्त हे शुष्क शीर्ण।
हिम–ताप–पीत, मधुवात–भीत,
तुम वीतराग जड़, पुराचीन!!''[4]

––

''डूब जाय भावना ज्वार में
मनुज हृदय के
रूढ़ि, रीतियाँ, जाति पातियाँ''[5]

छायावादी कविता में नारी को जो महत्व प्राप्त है, वह पहले की अपेक्षा कहीं अधिक गौरवशाली है। छायावाद के जनक जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में नारी लज्जा संग के प्रति आदर्श सोच रखी। उन्होंने नारी को पुरूष की प्रेरक शक्ति तथा श्रद्धा का पात्र माना।

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में''[6]

छायावाद का मूल अर्थ लेकर काव्य क्षेत्र में चलने वाली महादेवी वर्मा ने भी भारतीय नवयुवकों को जागरण का संदेश देते हुए कहा –

''अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कंप हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित ब्योम रो ले,
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत शिखाओं में निठुर तूफान
बोले पर तुझे है नाश पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना।
जाग तुझको दूर जाना।''[7]

महाप्राण निराला ने अपनी कविता 'राम की शक्ति पूजा' के माध्यम से तत्कालीन भारतीय सैनिकों को विजय प्राप्त करने के लिए शक्ति अर्जित करने की ओर इंगित करते हुए कहा–

''रघुवर विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरूष–सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण''[8]

इसी तरह निराला जी अपनी 'सरस्वती वंदना' में समूचे संसार को जगमग करने की प्रार्थना करते हैं :

''काट अंध–उर के बंधन–स्तर
बहा जाननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलषु–भेद–तम हर प्रकाश भर
जग मग कर दे।''[9]

निराला जी ने राष्ट्रीय जागरण के साथ–साथ सामाजिक जागरण को भी ध्यान में रखा। अपनी सरोज–स्मृति' कविता में उन्होंने ब्राहमण्यों में जो 'कुल–गोत्र' का भाव (ऊँच–नीच की धारणा) होती है उस पर भी उन्होंने व्यंग्य बाण छोड़ा –

''ये कान्य कुब्ज–कुल कुलांगार
खाकर पत्तल में करें छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषय–बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरूस्थल नहीं सुजल।''[10]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि छायावादी कवियों ने न केवल प्रकृति, रहस्य, एवं प्रेमपरक रचनाएँ लिखीं, बल्कि समूचे राष्ट्र एवं समाज में जागृति लाने का कार्य भी किया।

4. उपसंहार :

छायावादी साहित्य, हिन्दी साहित्य की वह निधि है जो देश, समाज एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलुओं को आत्मसात किये हुए हैं। छायावादी कवियों ने केवल कविता ही नहीं अन्य विधाओं में भी कलम चलाई और हर संभव तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखा। चाहे 'प्रसाद' की कहानियाँ, उपन्यास या नाटक हों, 'निराला' की कविता या उपन्यास हो, महादेवी वर्मा की कविता या संस्मरण हो और 'पंत की कविता, कहानियाँ नाटक या उपन्यास हों, सभी में कवियों ने अपूर्व आदर्श का समायोजन किया।

'छायावाद' के बारे में यदि कहा जाय तो यह एक ऐसा अंतराल है जो स्वतंत्र रूप से सभी क्षेत्रों में कामयाब रहा। इस पर किसी 'वाद' का आक्षेप लगाना व्यर्थ है। छायावादी साहित्य हिन्दी जगत के लिए सरस्वती का ऐसा भण्डार है जो साहित्य रूपी मानसरोवर में खिले हुए कमल के समान है। विहंगम दृष्टि डाली जाय तो हमें महादेवी के काव्य में तो हृदय कमल की पंखुडियाँ ही बिखरी हैं। निराला का मुक्त छंद 'सरोज–स्मृति' जैसी पुत्री के सौन्दर्य का अतुलनीय वर्णन हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। पंत जैसी प्रकृति की सुकुमारता का स्नेहसिक्त आनंदमय वर्णन एवं प्रसाद जी का मानवतावाद कामायनी में पूर्ण रूप से फलित हुआ है। इसके अलावा बच्चन के प्रणय गीत हिन्दी के अमूल्य धरोहर हैं।

छायावादी काव्य के समग्र आकलन से यह स्पष्ट होता है कि यह काल हिन्दी साहित्य का उत्कर्ष काल है और आगे आने वाले कालों के लिए भावों एवं विचारों का संकलन है। इसके साथ ही छायावादी काव्य विषयवस्तु एवं शिल्प विधान दोनों ही दृष्टियों से नवीन है। लाक्षणिक भाषा प्रतीकात्मक शैली, नवीन अलंकार विधान, मुक्तक गीत शैली उपचार वक्रता आदि के कारण इस काव्य धारा का शिल्प बेजोड़ बन गया है। छायावादी कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को सुकुमार, लंबित एवं मधुर बनाकर उसे काव्य भाषा के लिए उपयुक्त बना दिया अतः हम कह सकते हैं कि यह काल, इसके कवि एवं इसका साहित्य, हिन्दी के लिए उपहार है।

5. संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 362 प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 362 प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।
3. अपरा–निराला, पृ. 16 प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1–वीं, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002
4. तारापथ– सुमित्रानंदन पंत, पृ. 117, प्रकाशक : लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद –1, संस्करण : 1991
5. तारापथ – सुमित्रानंदन पंत, पृ. 201
6. कामायनी – जयशंकर प्रसाद, पृ. 47, प्रकाशक : कमल प्रकाशन, नई दिल्ली 110002
7. संधिनी – महादेवी वर्मा, पृ. 111, प्रकाशक : लोक भारती प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1
8. राग विराग – निराला, पृ. 99 प्रकाशक : लोक भारती प्रकाशक 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, इलाहाबाद
9. राग विराग–निराला, पृ. 75
10. राग विराग–निराला, पृ. 88